उत्तरप्रदेश रूकनपुर में विशाल सतनामी सत्संग सम्पन्न

खुर्जा बुलन्दशहर (उत्तरप्रदेश) से 11 कि. मी. राष्ट्रीय राजमार्ग में स्थित रूकननपुर ग्राम में दिनांक 9 जून 2010 को विशाल सतनामी सत्संग सम्पन्न हुआ। बताया जाता है कि इस गांव में राजस्थान के राजपरिवार से कायम कुवर साहब यहॉ आये और यहीं से उन्होंने सतनाम का प्रचार किया। यहॉ उनकी समाधि भी है। वे सबलदास जी के अनुयायी बताये जाते है।

बाबा सबलादास के बारे में बताया जाता है कि कालान्तर में जब भारतीय वैदिक परम्परा के आधार सूत्र तथा धार्मिक शिक्षा के एकाधिकार प्राप्त उस समय के ब्राह्मण समाज ने आध्यात्मिक परंपराओं को अपने निजी स्वार्थ के लिए तोड़ मरोड़ कर विकृतियॉ फैला दी थी तब समाज में सद्धर्म की जगह पाखंड तथा सदाचार के स्थान पर अनाचार का बोलबाला होने लगा। फलस्वरूप महमूद गजनी तथा मोहम्मद गोरी आदि के आक्रमणकारियों ने भारतभूमि पर अपना पैठ बनाया तथा उनके द्वारा सत्ता के दुरूपयोग ने लोगों को और भी स्वार्थी, अवसरवादी तथा धर्म के प्रति असहिष्णु बना दिया। योग और ध्यान आदि बौद्धिक साधना के बदले अज्ञानता के पथ पर शीघ्र लाभ प्राप्ति के चक्कर में देवी देवताओं को मानने व मूर्ति पूजा में विश्वास करने लगे। स्वयं की आत्मशक्ति को जगाने के बदले भाग्य का सहारा ढूढ़ने लगे। अन्धविश्वास और रूढ़िवादिता से ग्रस्त अज्ञान व अनपढ़ समाज को अवनति के गर्त में ढकेल दिया। ऐसे समय में अवगत स्वरूप सतगुरू बाबा सबलदास साहिब का प्राकट्य हुआ। उन्होंने बाबा नितानंद साहब को सतनाम ज्ञान से अवगत कराया। आपने गांव गांव घूमते हुए साधपुरा तपस्थली आश्रम (राजस्थान) को अपना ज्ञान साधना का केन्द्र बनाया। राज परिवार में जन्मे कायम कुवर साहब को नितानन्द जी का शिष्य बताया जाता है। ये अपना राजपाठ छोड़कर सतनाम धर्म के प्रचार में लग गये।

9 जून 2010 को सुबह 8 बजे सतनामी संतों का मिलन समारोह अत्यंत सराहनीय रहा। हजारों की संख्या में लोग सड़क के दोनों ओर आगन्तुकों के स्वागत मे पलकें बिछाये खड़े रहे। सभी आगन्तुकों का दूध से पैर धोया गया। दोनों ओर से सतनाम मंगल गति गाये जा रहे थे। महिलायें बढ़ चढ़ कर कार्यक्रम में हिस्सा ले रही थी। मध्य में मिलन मंच बनाया गया था जहॉ सतनामी संतों का मिलन हुआ। यह मनोरम मिलन कार्यक्रम लगभग दो घंटों से ज्यादा चला।

मिलन के बाद सभी सभा स्थल की ओर रवाना हुए। सभा स्थल खचाखच लोगों से भरा हुआ था। बताया जाता है कि इस समारोह में भाग लेने आसपास के लगभग 194 गांव से साध सतनामी इकट्ठा हुए थे। इसके अलावा आगरा, बृन्दावन, मथुरा, बनारस, गाजीपुर, बारावंकी,

लखनऊ, दिल्ली, राजस्थान, बिहार, उड़ीसा, झारखण्ड व छत्तीसगढ़ से भी सतनामी समारोह में भाग लेने आये थे। सभास्थल सतनाम धाम के समीप ही रखा गया था। सतनाम धाम में नये सतगुरू का दीक्षा समारोह भी आयोजन किया गया था। नये सतगुरू के बारे में बताया जाता है कि अभी वह कक्षा 9वी का छात्र है ऊनके माता पिता ने इस बालक को सतनामी समाज के लिये अर्पण कर दिया है। यह बालक आजीवन ब्रह्मचारी रहेगा और श्री सुरेशचन्द्र (वर्तमान पीठासीन सतगुरू) के नेतृत्व में पाठ- पठन व आगे का शिक्षा अध्ययन करेगा जिसका सारा भार आश्रम के द्वारा वहन किया जायेगा। दीक्षा स्थल पर सभी बाहर से आये आगन्तुकों का साल भेंट कर स्वागत किया गया। सतनामी समाज में पहले बार यह एक उत्तम प्रक्रिया देखने को मिला।

कार्यक्रम में विशाल सद्गुरू भण्डारा आयोजन किया गया था। दस हजार से ज्यादा लोगों के लिए खाने पीने का व्यवस्था था। भण्डारा में पहले सभी बाहर से आये मेहमानों से प्रारंभ किया गया। मीठी पूड़ी खीर कई तरह के साग सब्जी हाथ में लिए बच्चे से लेकर बुजुर्ग बड़े आदरभाव के साथ सेवा में तत्पर नजर आये। खाने के बाद सभी प्रमुख आगन्तुकों को साठ साठ रूपये भोजन उपरान्त भेंट किया गया।

भोजन उपरान्त सभा स्थल में जन समूह इकट्टा हुआ और सतनाम सत्संग प्रारंभ हुआ। गुरू वन्दना के बाद श्री हरिप्रतापदास ने सतनाम की भूमिका पर अपना विचार व्यक्त किया। श्री टी. आर. खुन्टे ने सतनाम की विस्तार से व्याख्या करते हुए सतनाम धर्म की आवश्यकता पर विशेष जोर दिया और आगामी 2011 के जनगणना में सभी सतनामियों को अपना धर्म सतमान धर्म लिखने का सुझाव दिया जिसका जनता ने करतल ध्वनि से स्वीकार किया। आपने यह भी बताया कि आज भारत भूमि में कही सतनामी सम्प्रदाय के स्वरूप में है तो कही कल्याणकारी पन्थ तो कहीं विशुद्ध सात्विक विचारधारा के रूप में सभी समुदाय के लोग जुड़े हुए है। हमें सबको एका मंच पर एक मत में लाना होगा तभी इसकी महत्ता का लाभ आमजनता को मिलेगा। बृन्दावन से आये अवघट सन्यासी श्री आनन्दस्वामी ने गान के माध्यम से सतनाम की व्याख्या करते हुए जनसमूह को सन्त कबीर की वाणी से आह्वान किया। बृन्दावन से ही आये एक और सन्त ने सतनाम को ब्रह्म और आत्मा के साथ जोड़ने का प्रयास किया और भजन के माध्यम से जन समूह को सम्बोधित किया। गाजीपुर से आये महन्त शत्रुहन दास जी ने संक्षिप्त में भूला साहेब सन्त भीखा साहेब की वाणियों के माध्यम से सतनाम के सात्विक स्वरूप और दैनिक जीवन में सतनाम की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। बाराबंकी कोटवाधाम सतनामी शाखा से आये श्री कमलदास जी ने बांसुरी बजाकर संतों की वाणियों को पिरोया। अन्त में श्री सुरेशचन्द जी ने आभार व्यक्त करते हुए सतनामी आन्दोलन को पूरे भारत में पहले गांव गांव शहर शहर

तक फैलाने की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि सतनाम धर्म ही भारत का प्राचीन और मानव जाति का मूल धर्म यही जन जन के कल्याण का एक मात्र रास्ता है अतः हमे इस आन्दोलन मूर्त रूप देने के लि्ए सबको तन मन और धन से सहयोग करने की आवश्यकता पर जोर दिया और अंत में सतनाम वन्दना के साथ सभा को सम्पन्न होने की घोषणा की।